सुनाव जिनको ॥ ऐसेरामच
न्द्रवैदेहीजेसीता तिनको
पदवंदतहोंसेजोसुखारवि
न्दताकेकपरलवरलुनाय
रहे ॥ श्रीसीताजीसहित
पौरलस्यकेसंहारकतीहो
सेजोरामचन्द्र तिनकोनम
स्कारकरहूं ॥ २ ॥ वंदेतामम
स्कारकरतहूं ॥ कैसेहैरामच
न्द्रकेचरणारविंदकमलक्ह
याहेसुरदेवतानमेश्रेष्ठन
कनपैकपाकरनहारसमुद्र
मतेहनूमानजनकारकेसा

वातप्रकारकेनाक्षिरपा।
तप्राप्तिहोयसोसुनवेकी।
हमारीइच्छाहैताकोंतुमक
हो। पू। अवसूतजीकहित
भयेइच्छासोएकसमैनारद।
जीनेभगवानतेप्रस्नकरीजे।
हजेसेभगवाननेनारदसेको।
हीसोसंपूरणसावधानहोके
तुमसुनो। द। एकसमैनारद।
जीपरायेस्रगहेकीइच्छाक
रकेत्रिभुवननानाप्रकारकेलो
कतिनमेफिरतेभयेमृत्यु।
लोकतामेआवतिभये।

नस्रुवणिनकोवाखिना
धारणकियेशरवचक्रगदाप
द्मलियेवनमालापहिरेभये ७
भगवानकोऐसोरूपसोंदे।
खकेनारदजीस्तुतिकरतेभ
येहेभगवानतुमकोहमारी
नमस्कारहैकैसेहोतुमवा
णीकेमनकेजाननहारहो
अनंतअनंतरूपहेअनंतश
क्तिहैमहाराजआदिमध्यअं
तताकोकारणहोनिर्गुणहो
गुणकीआत्माहोसम्पूर्णगुण
णनकेआदिमूर्तिकार।

र्थकोटेसोतुपायतुमकहोमे
हुनाथताकेसुनेकोइच्छाहेसे
श्रीपुरुषपावनकेकहें।२५।तबभ
गवाननवोलेहेसाधुतुमनेश्रेष्ठकी
प्रश्नकरीमेंसमस्तकेआपाकेअर्थ
ताकेकियेतेमहतेक्रूरजायत
कोकहेंहेंसोतुमसुनो।२६।हेनार
दजोमाघकेससहेताकोवडापुन
हेसकलमलताकोमेटतहेसोतु
म्हारेसेहितकेअवग्याकोपश्च
हे।२७।कोनसोव्रतहेताकोम
नसुकरेहे।समस्तपापको
सृतहेताकेकियेतेश्रीकृष्णसुर

करैसर्वत्रविजयकोदेयश्रेमोह
तवाकोजाहितताहिनकरैनकि
करैकेयृतश्रद्धासहित ॥ २० ॥ स
त्पतारायणात्मानानकोपूजनर
त्रिमेंकरैतौरणादिकरैचन्दरखा
रवांधेकेरंकनगाहे ॥ २१ ॥ याकक
तत्रस्थापितकरैब्रजासहिक्षा
तसोतरकेरत्नसहितस्तुपारीक
रकेसहित ॥ २२ ॥ पूर्णताकोमाता
कलसकोपहिरावैसततजाता
केकपरकाताराकोधरैरसमीव
श्रसैनाकोटकेतातानकारको
नातिनासोंकहै ॥ २३ ॥ ताकेपारस

माकेंमध्यापितकौरेस्वस्तिका
क्षतसहितकीमाणाप्रतिष्ठवि
रे ॥ २८ ॥ चंदनकरिकेसुगंधि
कफेलेपतकौरीरितुकलसु
द्रधूपदीपफलवैवतातांवूलक
हि केसोटसोपचारपूजनकोरे
२९ ॥ ब्राह्मणनककेसहित
धम्मीमेतत्परहोकेफलता
ख्यवंधुनकोवुलाकेनकि
सहितनैवतोगानगावेस्या
दसहित ॥ ३० ॥ स्नानफलकहि
यकेतोयपदृघ्योरस्कान्प्राट
त्रयमाचाभक्तोश्रीराटोताभेस

कीवाक्षा निश्चय सिद्धहोयगी।
३४ निश्चेशकर्केकलियुगमय
हेअपासकोटोसोहैसोतुमसेक
होहैजूनरश्रीरकोदैहैनाकरि
केपहिलेयहद्रष्टांतकियोगयो।
जाकोइतिहासकहतहैं ३५
कृपाकरिकेभगवाननेत्राह्म
णकोरूपधरिकेप्रगटभयेसो
योइतिहासब्राह्मणकोनराव
नसम्वादताकोकहतहै ३६
काशीपुरीताकेविषेएकब्राह्म
णहोतभयोदीनकहीगरीबभ
हुतौनित्यभिक्षाकरिकेकुटं

नकीआसाकरिजाकेवार
कौंनाथिहै ॥४॥ कमलगावानवाक्र
स्वातेंकहतनयेक विप्राके
लियेछिपायकेंगहमवरनीत
हेंश्रीहरिणकोनिहैकृतुभरेउप
देशतेंसत्यनारायणकोनित ॥५॥
बोसहैसत्यनारायणतीनकौस्के
दारिद्रशोकसन्तापतिनकोहरेहै
मोहवकोदेहैमनकोछुटादेयहै
सोसत्यनारायणतिनकोसरणा
गत ॥७॥ सोसुनबाह्मणकोसमम
श्री ॥ भगवनतेंकह्यणाकस्त्रितव
ब्राह्मणापकरपूछतभयो ॥ सत्य

जौ
कृष्णजी ॥ ४६ ॥ पूजा कीम
मिश्री संकल्प ये जाग के के
न्याय के श्रीअर्थ सन्त नाराणके
पूजन में सुमय को भाटक
रो ॥ ४७ ॥ से कहत नये श्री
द्वारे सतैयां नगवानके ह
यको कैसो सत्र हृदे सेय श्री
सी श्री नामसुन्दर रूप वारि कुं
तिन भैंसं ह चक्र गदा पद लि
ये ॥ ४८ ॥ पीतांबर को धारण
किये से आनन्द मानेन कर
माना पहिरे हे ॥ ४९ ॥ तासे
गाल नोवद्र नसुन के मह

न्मूर्तिहैतुमकोहमारीनम
स्कारहै ॥ ५२ ॥ हमश्रीनाथस
देहमारोजनमश्रीजनकृत्यकस
भयौवाणीकिजाननदासतुम
सत्यचन्मयेतातें ॥ ५३ ॥ सोमहा
राजकहानुणीनकरैनतातें
कोनफलसेकियाहीनंमंदा
भागीताकोहैसुफलकरी
॥ ५४ ॥ सोमहाराजकोनकीपू
ताकरकोनविधानहैसतुम
करोकृपाकरिकै ॥ ५५ ॥ तब
भगवानकहतभये ॥ सखीवा
णीमेरीपूजाकरोमेकहता

कश्रकारकेरितुपावतवेदको
सद्धतसहितपूजाकरें ॥ ८० ॥
मिष्टातपानमेवासहितश्रद्धा
सहितजनकिमेश्वरहोकोपू
जनकरें ॥ ८१ ॥ परंतमेरीकथ
ताकोपावमश्रारद्धयसेनेरा
गाकेवदियाकेइतिहासता
कोसुनो ॥ ८२ ॥ कथासुनके
नमस्कारकरेतवप्रसादले
मामभातकैयुभजनकरेंजो
मिलताकोभोजनगावें ॥ ८३ ॥
देवहदसोहमारीप्रीतिनहींहै
हमतोभक्तकेवसहैं ॥ सोय

संसम्यनायणकीपूजाव
करैगे॥६३॥अहविश्वयअप
नेमनमेंकरकैनिवाकोम
थंसरमेंजानतयोमैंहीवि
नामानेयाकोंवडतद्रव्या
मिलो॥६४॥तवकोनुकदे
खकेअपनेमहकोआन
तनयोमेंहूंतंतवसाणीसे
कहतनयोब्राह्मणीअसन
होतमई॥६५॥तवतनोकी
आज्ञापाइकैमदद्यकीस
मिग्रीलावतमई॥अपनेम
ईवंधुपरोसीतिनकोबुलाव

तवनगाथातवोलेतथास्त
मतुमनेकोहीत्रासीहोयगा
वडुंगमीहोयगीयदवकेहवे
माहांनेत्रेतराध्यानहोतनये
मतपूर्तादृक्तनछकत्पहोतनये
सवनमस्कथ्कोर्त्येपे॥१४॥तव
सनमंदृश्यामेगिनचेरके
नमस्कारकेतेमो॥श्रीरस्तु
हितप्रशास्तेतनदेगाश्रेतत
रसवमत्युप्रमा॥रा॥कहीहो
रा॥भयुंतेत्रेपनोमहवोनात
तयो॥१॥पा॥तेतुदपातोग्रवासे
नमोमतनातायुथमाहे

नमनानकीपूजाकरैहेंवि
भिपूर्वककतकयातेजलपीके
कडोखश्रायश्रमानोयाभिद्द
ककेधनकरहांतेआयो ३
तब निबाद्द बिचारतभयोज
ययाकीरिग्नोतककरतुनक्ष
श्रवधनयाकेक हातेआ
योयह विचारकेनमस्कार
करतभयो ४ यहतुमतु
हारेकहांतेंआयोहरिश्च
कहाय्योसोतुमकहोहमा
रोसुनवेकीइक्षाहै ५ तब
सतानंदकहतभयोविसाहे

तियादकेहृतेनमोतोस
छीतव्वयतातंदवासेइति
हासकाहुलतो ।। करोजाहि
केद्वारणीपुरसहतातेंवडो ।
भ्रमोतमाहैवंदवूरवकोना
हैप्रजाकोपालनामेंतव्यर
हैमंतेहैविसावनाकोमोभव
हैपीवडोनराकमीनारायण ।।
कीसेवामतव्यहै ।।१०।। सोवं
द्वूरजामेहेस्राश्रमसेंस्रा
वतनयोसनतनारायण ।। वं
नाकेधर्मसोवासविधान
केहेहुकोसुनो ।। मेवं

गेहूंकौ आटा सवा सेर आ
दिसमाग्रीतामहुध्यथीसके
रा मिलावै १५ पीरपुआक
सारये बनावैं अक्षु केसुरस्क
लघुसदी पताका रिकेसूजन
करै १६ पर्मत्ति सहित
अनेकप्रकारकी समिग्री
सहित नगवान नैव्यस नही
ग्रसत है केवल भक्तिन प्रा
सन है १७ भगवान परिपू
र्णहैं तिकै न सहै कैसे को
सदुजो धनका मेना त्यागक
रिकै पूजा को छंडके १८

साद्तुमकमकराकरोगीती
सहितसत्यनारायणकोपू
जनकरो ॥ २२ ॥ यालोकमेंसु
खभोगकरें ॥ मृत्युहोगीतब
नभस्थानकेनिकटग्रामहो
गो ॥ यहसुनकेनिभाकत्यक्ष
त्मयोसतानंदकोनमस्का
रकरिकैचलतभयो ॥ २३ ॥
अपनेसाथीनगामआयकै
सत्यनारायणकीपूजाको
महात्मकहतभयोसुनकें
सबप्रसन्नहोतभयेयहवि
चारकतभये ॥ २४ ॥ सत्यनार

याद्रतुमकन्नकराकोसीती
सहितसत्यनारायणकोपू
जनकरो॥२२॥यालोकमेंसु
खभोगकरें॥मृत्युहोगीतब
नभभवानकेनिकटप्राप्तहो
गे॥यहसुनकेनिश्चाकलक
त्पत्तयोमतानंदकोनमस्का
रकरिकैचलतभयो॥२३॥
अपनेसाथीनगामआयकै
सत्यनारायणकीपूजाको।
महात्मकहतभयोसुनकै।
सबप्रसन्नहोतभयेयहवि।
चारकतभये॥२४॥सत्यनार

।ता हां विश्राम करि कैय
ह कौतुक देषत भयो ॥ ६ ॥ नौ
का सैन्नतर कै महलीला दे ।
षत भयो को ॥ सो नतरि कैय
ज्ञस्या नताको देष कै श्राए
रस हित यूछत भयो ॥ ७ ॥ श्राप
नमेसना कहा कहे हैं कौन कौ
पुत्रन करो हो तव सना कौतौ
नबोलत भये सपूतना राणी को
पूत्रन कहें ॥ ८ ॥ तया बंधु
सहित नाश नकै हैं तु सि
श्रामान कोइ पुत्रा हौं तौ ज
नकरो ॥ ९ ॥ कथा श्रावणा कै

गी कहतमयो । ५ कहा का
है हैनकमावानमेरे संतानत
हहितातें परऐश्वर्यधनपहं ।
पाहै सोतुम्हारे प्रसन्नतेपुर्व
नाकर्यायो कोमतिहोय । ६
कांचकजो सर्वैर्यताकीपता
काननकहे ह्रयानिमितुम्ह
तुम्हारी पूजाकरगो संपूर्णम
नाकेभोगकहतयो मेरा क
र्यसिद्धिहोयतवपूजाकरो ।
७ सभाप्रस्तुतस्तुतकमयीतथा
स्तुतिसहीवहीगीतभगवान
कोनमस्कारकरिकेसना

ाकहतनयो॥प्रकहाका।
हैहेसकमाभावानमेसंतानन
हहैतातेष्यहऐश्वर्यधनवहा।
थाहैमोनुमहारेश्रयाहत्तेपुत्र
किस्याभोकोप्रतिहोय।ह
कजीरवनेर्यताकोपता
केहेक्यातिभिवद

केऽर्थफेरिवततनयो ॥ तमे
रकैतीरएकसहतामेंवासक
रैतेतोबेवगोकतैतयो वडु
तकालसहतनयो ॥२॥ सतये
वासीसेकियेनोसंकतूमस
नाथनकीपूजातनकोनहि
करीताकेविवेपसेइनको।
विपतिहोतनयी॥३॥एकदि
नाराजाकेएकसेवेरआयेस
वमनुष्यनकोमोवतुरेसके।
वहुतदुःखपायेजातनये
॥ भोतिनकोमातापनेक
प्रकारको वंहमनकीसीनके।

नाश्रीचोरतकोदृष्टकेताश्री
।८। जोतुमनताश्रीगतोतुम।
कोमरवायडातृणो ।ऐसेदूत
नसेकह्योतदूतराजाकेन
वनसुनकेकिंकरदलतनमे
।१०। तबदूतलिकेविचारकरे
नयेधनकहेनहीमानिहो।
मणानचोरमिलेगोयहविचा
रकेकितापकनेनये ।। त।
वदूतनकोसिरदारतातेक।
ह्योराजाहमारेसबमानकोम
रवायडानेगीश्रवहमकोसु
स्वकहांमहविचारकरतेरा।

पेजनकेतौइक्कौतरीपावको
मंगलेमेंतौकडारतनय ॥६॥
एसीव्यवस्थाहौतोक्योंनथी
तबबिलापकीनेंनयबारंबा
॥७॥ हातानहातात कदके कैसाधु
कौनमाईधुनकर्तेनयघोहमा
त्रीमतीजीनायंकांहंहोगी
देखोबिधाताकीउलटीगति
है॥८॥ देखोबिधातकीलि
यताहमारोहस्तूल्पकारदि
योपहलेंवांदुःखकूपासहुता
मिंहूंनयोपहलेंहुतनयोप
ंकटकोदूरकोगा ॥१०॥ म

दकोप्राप्तभई ॥२३॥ याकीश्रीना
नर॥ कहिनासाधुकीकन्याने
जनवक्षकितासुतांतेकोग॥ ह्रैमे
आकेदेखतनईसत्यनारायण
कीपूजाहोंरहीहैं ॥२४॥ जातन
केनाथतुमसोंप्रार्थनाकरू
हूंहेसत्यनारायणभगवान
मेरेपिताऔरस्वामीजाहि
घरमेंआवें ॥२५॥ जबतुमऋा
नेंगद्देंकेहारीहमपूजाकरेंय
हैश्राथनातुमतेकरेंहैंतबश्र
तांतदबोलेतोसेहौहौगीतुम
अपनेगद्देकोजाओ ॥२६॥

रवैकोसहरमेंजातनई॥२९॥
वाद्रम्य किसामिनीनायके
कलावतीमातासहितपूजा
कतैनई॥३०॥लीलावतीकं
न्यासहितविधिपूर्वकपूजा
कीनापूजाकेप्रतापतेसत्यन
रायणप्रसन्नहोतनये॥३१॥प्र
सन्नहोकेराजाकोस्वप्नदिख
वतनये॥राजाक्षपनेपुंगाप
रनिद्रामपरीहोथ्रीरीभीयान
नाकोरही॥३२॥वासमेंजास्य
ाकोस्वप्नदिखाकेकहतनये
माहीकस्तवाणीताकोजानीत

वकाहीयाकेवंसनकोकार
णकहो ॥ ३६ ॥ तिनसबकेमत
कोसुनकेउनकोवुलावतभ
ये ॥ वुलायकेपूछतनये ॥ ३
७ ॥ कोनतुमहेंकोनतुम्हारी
ग्यातिहैकहातुमारोवासहैको
हैकोधर्मआयेहो ॥ पस्स्याके
मिसईसोकहो ॥ ३८ ॥ तबसुभ
कहतनये ॥ रत्नपुरमेवसेहै
वनियाजातहैवणिजकेअर्थ
आयेहैंवणिजआजिवकाहे
मारीहै ॥ ३९ ॥ मणिमोतीक्व
नकोवृत्तांतसहरमे ॥ आये ।

स्तनयो ॥४३॥ तबमार्कंडेतु
लायकहँ आमतननाई ॥
अकेसुगंधतेलसोंउवटन
करवाइअस्नानकरवाये ॥४४॥
अष्टनेजनहुतकोकराये ॥
राजानगहनाबस्त्रसवपहि
रायोसाधूकोदियो ॥४५॥ अ
वराजानदियोतवसाधूअप
नहेकेबोलतनये ॥४६॥ कै
हमहेराजाहमनेवहुतदुःख
पाये ॥ सोराजाअबहमरेस
कोजायवुहाराअबजाहोय
तौपहुपुनकेराजाखजाना

त्यनारायणकीपूजानकरीस
त्यनारायणकोपकतेभये।
॥ सत्यनारायणकीपूजा।
केविषैसत्यनतफलकेदेनहा
रतपस्वीकोरूपधरिकेसा
धूसेकहतभये॥२॥तेरीनौ।
कामेंधनहैसोकहूसमको
दूतवसाधूकहतभयोनौ
कामेंलत रिकेमेरीनौकामें
धननहीहेलपताहैतासोंछ
परहीहै॥३॥अपनेस्थानको
जाओ।विनाधर्मतिकयेवि
शेषमेंकहाफलहै॥४॥इहक

यो॥३॥ तबसाधूबोलेतुमनेयो
तुमकोनहो यहपूछतनयो
देवताहोमनुष्यहोईश्वरहोदे
वतानकेदेवताहोकोईतुम्ह
रेपराक्रमकोदेखनहीगाने
सोतुमआज्ञाकरोमैंयोको॥
नआपराजैहै॥८॥तबवनपखी
नेतिनकोअनुआपहीहै
आपनोमित्रआपहीहै॥मो
नताकोकोऊहथ्यावादकैसे
हैमत॥ अस्थानतासेनहींजा
नोधनकेगर्वसे॥१०॥फिर
पूछीकिहेतनयोकृपाकि

मोरकरो ॥४॥ सत्यनारा
यणभगवानतिनकोस्तुप्रति
पच्छीहैतबसाधुनमस्कार
कतेनयोवारंवारपरकम
कतेनयो ॥५॥ श्रणमहोकेम
हाराजतीमेस्तुतिकतेनये
हि ॥६॥ सत्यरूपहोसत्यकेमित
पीहोतुमसत्यहोतुम्हारेस
त्यकरकैसबसत्यहैतुमक
नमस्कारहै तुम्हारीमाया
कैसवमोहितहैसोहमने
अपनोकल्याननहीजानो
॥७॥ दुःखरूपीसमुद्रतामेंबू

धनहोय ॥ २१ ॥ मेरी पूजामें सब
द्धतकि रहैं मेरे निकट आयत्रे
गतुमनेस्कृतिकरी ताको प्र
सन्नय ॥ २२ ॥ आपानहोके तु
मकोवर दियो जोकामना तु
म्हारी सिद्धिहोय यह कहके
नयावानअंतरध्यानहों गये
साधूआपने आश्रमको आत
नये ॥ २३ ॥ आपने नगरकेपा
स आये नंदूतको घरमें के
तनयो ॥ तनंदूत घरन आ के
लीन्हावतीसे कहन लयों ॥ २४
आवाईसहित साधू आगेवा

मयोदेखोकैदमेंरहेंतबकु
तमकोरकेदुःखजातनत ॥
मोदुःखकभीनहीनयोय
हेंकेहृदकीतरेंगारतनयो
बिधमानुमनेकहाकरी ॥ २०
स्वसाधूकहृतनयो ॥ तुमक
हानये ॥ तुमबिनहमारेजी ।
वनकैसेहोयतुम्हार ॥ २१ ॥ पुन
करकेहमहीनसोतुमनेवि
धनादहमकोनिरासकरदिये
अबकैसेहमारोजीवनहोय
२२ ॥ याकेअंतरहीनानती
मंगलाचारसहितपढ़ुवीतल

सूतकोसोरंगकमलसेनैन
कोमलशरीरमेंतितकोमा
लागहैसेपरीस्तनकेऊपर
सोनादरहाहै॥३७॥हेनाथ
प्रियहोधर्मग्रहोंकेसूणा
केकरनहारतुमबिभिनेति
सकरदयी॥३८॥कहांमें
जानकहांमंककैसेसुख
हमकोमिलैकौनदुःखतेह
मकोछुडावे॥३९॥वेदमेंप्र
ससुनीहैपतिकोस्त्रीअर्द्धं
गीहैपतिकेवियोगतेहस्त्र
कैसेजीवै॥४०॥कल्पकी

जवनौकाउमेंनरीतक्रजवा
ईसलिपटकेंसवमुद्राहस्के
मातहोतनयो ॥४४॥ तवृसा
व मनुष्यस्त्रीस्येयमानतनये
म रके फेरिजियो तहांसाधू
हर्येयुक्तभक्तियुक्त होके ॥४५
पूजाकोसमिग्नीलावतनये
सवकोवुलावताभयोत्राह्म
णकोवुलावतनयो ॥४६॥ प
हिलेसंकल्पकरोजोद्रव्यको
सामिग्नीवनावतनयोना
नाप्रकारकेतोरणवनाये
अनेकप्रकारकेवंद्वावना

कैसे होतुम मैंश्रपराध
तेदयौतुमतो ॥५१॥ मुरले
श्रसुरगन्हसमनुष्यनागण
तम्हारेहोश्रंगतेंश्रबहैतु
वकेऊपरकृपाकरोहो मैं
पराश्रीहूंमैंगोन्हअपराधतेमा
रो ॥५२॥ तेमेंश्रमद्भुतिकरिनै
श्रद्यामैंगिरतनथो ॥ श्रेमसेंम
नहोके श्राभुडारतनयोत्रसा
नहेन्के ॥५३॥ श्रक्षिाातको
ोजनतकराश्मतनयोश्रपना ।
ातिमिनमाईकुटमना ।
तश्रप्रादपावतन

ननकीविभूस्ताकोरोवि
भूकोवहुतप्यारोहोता॥ श्रे
रसर्वदेवतानकेदेव॥ श्री
सत्यनारायणकीकृपा
सेसर्वबस्तुसुगमरही श्री
वैगीयाकृत्यकेबराबरको
ईयत्ननहीहैयाप्राणीको
पासे॥ श्रीसत्यनारायणप्र
त्यक्षफलदेहे॥ ५८॥ श्रीस्तु